कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक, हिन्दी, Sub
पार्ट I

निर्गुण भक्ति और सगुन भक्ति

(1)

निर्गुण भक्ति

(1) निर्गुण ईश्वर में विश्वास — सभी सन्त निर्गुन ईश्वर में विश्वास रखते हैं। ये कवि सुर और तुलसी के समान सगुण और निर्गुण के समन्वयवादी नहीं। इन्होंने 'ईश्वर' के सगुण रूप का विरोध किया है- कवि का कहना है —

दसरथ सुत तिहु लोक बखाना,
रामनाम का मरम है आना।

सभी वर्णों और समुचित जातियों के लिए वह निर्गुण एकमात्र ज्ञानगम्य है। वह अविगत है, वेद, पुराण तथा स्मृतियां जहाँ नहीं पहुँच सकती —

निर्गुण राम जपहु रे भाई, अविगत की गति लखी न जाई।

वह ब्रह्म पुष्प वास से पातरा है अजन्मा और निर्विकार है। यह सारा संसार उस अक्षय पुरुष रूपी पेड़ के पत्ते के समान है। वह ईश्वर घट-घट में विराजमान है कबीरजी का कहना है जैसे कस्तूरी मृग की नाभी में रहती है और वह व्यर्थ ही उसे वन में ढूँढने के

Scanned with CamScanner

(2) लिए भटकता है फिरता है, उसी प्रकार राम घट-घट व्यापी है उसे बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं। प्रियतम इनके दिल में है अतः उसे पतियाँ लिखना व्यर्थ है प्राय: प्रत्येक सन्त ने अपने मत के प्रचारार्थ अपना-अपना संप्रदाय चलाया।

(2) बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध—

संत कवियों ने बहुदेववाद तथा अवतारवाद पर अविश्वास प्रकट करते हुए इस भावना का निर्भिकतापूर्वक खंडन किया है। कारण, एक तो शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव शेष था और दूसरे इसकी राजनीतिक आवश्यकता भी थी। शासक वर्ग मुसलमान एकेश्वरवादी था। हिन्दू-मुस्लिम दोनों जातियों में विद्वेषाग्नि को शांत करके उनमें एकता की स्थापना के लिए इन्होंने एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया और बहुदेववाद का घोर विरोध किया—

चरनदास जी कहते है।—

यह सिर नवे न राम कूँ नाही गिरियो टूट।
आन देव नहीं परिसिये, यह तन जाये छूट॥

सन्तों का विश्वास है कि अवतार जन्म-मरन के बंधन में ग्रस्त है। वे भी परम ब्रह्म की भक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सभी सन्तों ने

(3) निन्दा की है। और उन्हें मायाग्रस्त कहा है। उनका भी कर्ता निराकार परम ब्रह्म है।

कबीर जी कहते है —

अलख पुरुष इक पेड़ है निरंजन बाकी डार
त्रिदेवा शाखा भये पात भया संसार ।।

(3) सद्गुरु का महत्व — गुरु को भगवान से भी अधिक महत्व देना सन्त कवियों की एक सर्वमान्य विशेषता है। कबीर जी के शब्दों में —

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े करके लागूं पाई।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताई॥

निर्गुण कवियों का विश्वास है कि राम की कृपा भी तभी होती है जब गुरु की कृपा होती है। यो तो गुरु की महत्ता सगुण भक्त कवियों में भी मिलती है। निर्गुण भक्त कवि सगुण भक्त कवियों की अपेक्षा गुरु को अधिक महत्व देते है।

(4) जाति-पाँति के भेद का विरोध — सभी सत कवि जाति-पाति और वर्ग भेद के प्रबल विरोधी है। ये लोग एक सार्वभौम मानव धर्म के प्रतिष्ठापक थे इनकी दृष्टि में भगवद्भक्ति में सबको समान अधिकार है —

Scanned with CamScanner

(4) जाति-पाँति पूछे नहिं कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।

इसका विशेष कारण यह है कि एक तो सभी सन्त निम्न जाति से सम्बन्ध रखते थे- कबीर जुलाहे थे, रैदास चमार थे, इसके अतिरिक्त भक्ति आंदोलन भी जाति-भेद एवं वर्ग-भेद को तुच्छ ठहरा रहता था सन्त कवियों ने हिन्दु-मुसलमानों में एकता स्थापित करने के लिए एक समान्य भक्ति मार्ग प्रतिष्ठित करनी पड़ी।

कबीर जी कहते है—
अरे इन दोउन राह न पाई।
हिन्दुअन की हिन्दुआई देखी, तुरकन की तुरकाई।।

इसी प्रकार है—
तू ब्राह्मण है काशी का जुलाहा चीन्ह न मोर गियाना।
तू जो बामन बामनी जाया और राह है क्यों नहीं आया।।

(5) रूढ़ियों और आडम्बरों का विरोध — प्रायः सभी सन्त कवियों ने रूढ़ियों मिथ्या आडम्बरों तथा अन्धविश्वासों की कटु आलोचना की है।

शेष भाग आगे

Scanned with CamScanner